नवीन पाठ्यपुस्तकों तथा नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित

संजीव®

आल इन वन

यह संजीव आल इन वन पूर्णतः नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

- पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल
- अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- हिन्दी के पद्य पाठ, अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का हिन्दी अनुवाद
- हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार व्याकरण का समावेश
- सभी महत्त्वपूर्ण मानचित्रों का समावेश

कक्षा 7

मूल्य 640.00

संजीव प्रकाशन, जयपुर

Visit us at : www.sanjivprakashan.com

इस पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

गुरुजनों से निवेदन

हमारे अनुभवी लेखकों तथा विषयाध्यापकों ने इस पुस्तक में विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है। वस्तुतः इनमें योग्य एवं अनुभवी शिक्षकों के कठिन परिश्रम का निचोड़ समाविष्ट है। प्रत्येक विषय का सरल प्रतिपादन, पाठ्य सामग्री का वर्णन और सम्प्रेषण छात्रों के स्तरानुरूप हो, इन बातों का पूरा ध्यान रखा गया है। इस पुस्तक में पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल तो दिया ही गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है। इस पुस्तक में सभी प्रमुख विषयों का पाठ्यक्रमानुसार अत्यन्त सारगर्भित वर्णन किया गया है जो कि विद्यार्थी के लिए अत्यन्त लाभप्रद होगा।

आपका सहयोग एवं आगामी संस्करण के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव एवं निर्देश अपेक्षित हैं।

प्रकाशक

विद्यार्थियों को पुस्तक के सम्बन्ध में जानकारी

- कक्षा 7 में सत्र 2020-21 से राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा NCERT की पाठ्यपुस्तकों को लगाया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिए गये अभ्यास प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। इन प्रश्नों में जो भी प्रश्न विद्यार्थियों के लिये उपयोगी हो सकते हैं उन सभी के उत्तर इस **संजीव आल इन वन** में दिये गये हैं। अध्याय के बीच-बीच में आये इन प्रश्नों को इस **संजीव आल इन वन** में **'पाठ-सार'** के बाद **'पाठगत प्रश्न'** शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। साथ ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यपुस्तक में जिस पृष्ठ पर इस प्रकार के प्रश्न दिये गये हैं उसकी पृष्ठ संख्या भी **संजीव आल इन वन** में दी गयी है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय के प्रारम्भ में संक्षेप में उसका सार दिया गया है। हमारे विद्वान लेखकों द्वारा इस पाठ-सार में 'गागर में सागर' भरने का प्रयास किया है। विद्यार्थी इसे पढ़कर पूरे पाठ का निष्कर्ष सरलता से समझ सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तकों के समस्त अभ्यास प्रश्नों का सम्पूर्ण हल दिया गया है साथ ही परीक्षा के दृष्टिकोण से अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का भी समावेश किया गया है।
- प्रत्येक पाठ या अध्याय में **वस्तुनिष्ठ, अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक** एवं **निबन्धात्मक** आदि सभी प्रकार के प्रश्नोत्तर दिये गये हैं। परीक्षा में जिस-जिस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, उन सभी को इस पुस्तक में दिया गया है।
- यह पुस्तक प्रश्नोत्तर रूप में श्रेष्ठ पुस्तक ही नहीं बल्कि **अभ्यास पुस्तिका** भी है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकेंगे-ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

प्रकाशक

प्रकाशक
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
© प्रकाशकाधीन
लेजर टाइपसैटिंग
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Dept.), जयपुर
अक्षत कम्प्यूटर्स, जयपुर
मेगा ग्राफिक्स, जयपुर

कक्षा-7 आल इन वन की विशेषताएँ

* पाठ्यपुस्तकों के सम्पूर्ण अभ्यास प्रश्नों का हल। अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के अन्तर्गत परीक्षोपयोगी सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश।

* पाठ्यपुस्तकों में अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। विद्यार्थियों के लिए उपयोगी इन सभी प्रश्नों के उत्तर 'पाठगत प्रश्न' शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं।

* अंग्रेजी एवं संस्कृत के सभी पाठों का कठिन शब्दार्थ सहित हिन्दी अनुवाद।

* हिन्दी के सभी पद्य पाठों की सप्रसंग व्याख्या।

* हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत में पाठ्यपुस्तकानुसार एवं पाठ्यक्रमानुसार व्याकरण का समावेश।

* सभी विषयों का वर्णन सन्तुलित दिया गया है। किसी भी विषय में न तो अनावश्यक मैटर दिया गया है और न ही किसी Topic को छोड़ा गया है।

छात्र/छात्रा का नाम .....

कक्षा ..... वर्ग .....

विषय .....

विद्यालय का नाम .....

आल इन वन

कक्षा-7

विषय-सूची

ENGLISH

HONEYCOMB

1. Three Questions 1
   1(i) The Squirrel 8
2. A Gift of Chappals 10
   2(i) The Rebel 20
3. Gopal and the Hilsa-Fish 23
   3(i) The Shed 26
4. The Ashes That Made Trees Bloom 28
   4(i) Chivvy 35
5. Quality 38
   5(i) Trees 44
6. Expert Detectives 46
   6(i) Mystery of the Talking Fan 52
7. The Invention of Vita-Wonk 54
   7(i) Dad and the Cat and the Tree 58
   7(ii) Garden Snake 61
8. A Homage to Our Brave Soldiers 62
   8(i) Meadow Surprises 76

GRAMMAR AND VOCABULARY

GRAMMAR

1. Articles 79
2. Adjective (Degrees of Comparison) 81
3. Adverbs of Manner 84
4. Preposition 86
5. Tenses 88
6. 'IF' For Open Condition 100
7. Framing Questions 102
8. Indirect Speech/Reported Speech 104
9. Phrasal Verbs 108

VOCABULARY

1. Sound 112
2. Missing Letter 113
3. Opposites/Antonyms 114
4. Homophones 118
5. Number 120
6. Gender 124
7. Suitable Words 125
8. One Word 128
9. Prefix and Suffix 133
10. Odd-One-Out 135

READING

Unseen Passages 136-142

WRITING

1. Paragraph Writing 142-153
2. Story Writing 153-162
3. Dialogue-Writing 162-163
4. Letter/Application Writing 163-170
Letters 163
Applications 166
Oral Examination 170-174
Useful Words of Daily Use 174-176

हिन्दी

वसंत : भाग-2

1. हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता) 177
2. हिमालय की बेटियाँ (निबन्ध) 181
3. कठपुतली (कविता) 186
4. मिठाईवाला (कहानी) 189
5. पापा खो गए (नाटक) (मराठी) 193
6. शाम-एक किसान (कविता) 197
7. अपूर्व अनुभव (संस्मरण) (जापानी) 201
8. रहीम के दोहे (कविता) 204
9. एक तिनका (कविता) 208
10. खान-पान की बदलती तसवीर (निबन्ध) 211
11. नीलकण्ठ (रेखाचित्र) 216
12. भोर और बरखा (कविता) 221
13. वीर कुँवर सिंह (जीवनी) 224
14. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिजाज हो गया : धनराज (साक्षात्कार) 229
15. आश्रम का अनुमानित व्यय (लेखा-जोखा) 232

व्याकरण-खण्ड

1. संज्ञा 236
2. सर्वनाम 237
3. विशेषण 238
4. क्रिया 240
5. वचन 241
6. कारक 242
7. लिंग 243
8. सन्धि 244
9. समास 245
10. उपसर्ग 246
11. प्रत्यय 247
12. विलोम 249
13. पर्यायवाची 250
14. तत्सम शब्द 251
15. युग्म शब्द 252
16. अशुद्धि 253
17. मुहावरे 253
18. लोकोक्तियाँ/कहावतें 255
19. शब्द-समूह के लिए एकल शब्द (स्थानापन्न शब्द) 257
20. पुनरुक्त शब्द 258
21. अनेकार्थक शब्द 259
22. विराम चिह्न 260

अपठित **261-263**

रचना

1. पत्र-लेखन 264-266
2. निबन्ध-लेखन 266-273
3. कहानी-लेखन 273-275

मौखिक परीक्षा **276**

संस्कृत

रुचिरा-द्वितीयो भागः

प्रथमः पाठः सुभाषितानि 277
द्वितीयः पाठः दुर्बुद्धिः विनश्यति 280
तृतीयः पाठः स्वावलम्बनम् 284
चतुर्थ पाठः पण्डिता रमाबाई 288
पञ्चमः पाठः सदाचारः 293
षष्ठः पाठः सङ्कल्पः सिद्धिदायकः 296
सप्तमः पाठः त्रिवर्णः ध्वजः 301

अष्टम: पाठ:	अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि	306
नवम: पाठ:	विश्वबन्धुत्वम्	311
दशम: पाठ:	समवायो हि दुर्जय:	315
एकादश: पाठ:	विद्याधनम्	319
द्वादश: पाठ:	अमृतं संस्कृतम्	322
त्रयोदश: पाठ:	लालनगीतम्	326

व्याकरण एवं लेखन/रचना

(परिशिष्ट सहित)

1. वर्णविचार:	329-330
2. कारकम्	330-332
3. शब्द-रूपाणि	332-338
4. धातु-रूपाणि	338-342
5. संख्यावाचका: शब्दा: (१ त: १००)	342-344
6. विशेषण	344-345
7. सन्धि-ज्ञानम्	345-347
8. प्रत्यय	347-348
9. उपसर्ग-ज्ञानम्	348-350
10. अव्यय-ज्ञानम्	350-352
11. विलोम-पदानि	352
12. पर्याय-पदानि	352-353
13. चित्र-वर्णनम् (वाक्य-रचना)	353-354
14. प्रार्थना-पत्रम्	354-355
15. संस्कृत अनुवाद	355-356
16. लघु निबन्ध रचना	356-357
17. कथालेखनम्	357-358
18. अपठित-अवबोधनम्	358-360
श्लोक-लेखनम्	**360**

विज्ञान

1. पादपों में पोषण	361
2. प्राणियों में पोषण	368
3. ऊष्मा	376
4. अम्ल, क्षारक और लवण	384
5. भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन	392
6. जीवों में श्वसन	399
7. जंतुओं और पादप में परिवहन	408
8. पादप में जनन	416
9. गति एवं समय	423
10. विद्युत धारा और इसके प्रभाव	432
11. प्रकाश	440
12. वन : हमारी जीवन रेखा	448
13. अपशिष्ट जल की कहानी	454

गणित

1. पूर्णांक	462
2. भिन्न एवं दशमलव	470
3. आँकड़ों का प्रबन्धन	484
4. सरल समीकरण	495
5. रेखा एवं कोण	506
6. त्रिभुज और उसके गुण	516
7. राशियों की तुलना	532
8. परिमेय संख्याएँ	545
9. परिमाप और क्षेत्रफल	559
10. बीजीय व्यंजक	568
11. घातांक और घात	574
12. सममिति	584
13. ठोस आकारों का चित्रण	595
दिमागी कसरत	603

सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत–2 (इतिहास)

1. प्रारम्भिक कथन : हजार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों की पड़ताल 606
2. राजा और उनके राज्य 613
3. दिल्ली : बारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी 621
4. मुगल : सोलहवीं से सत्रहवीं शताब्दी 627
5. जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय 632
6. ईश्वर से अनुराग 640
7. क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण 649
8. अठारहवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन 656

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन–2

इकाई–1. : भारतीय लोकतन्त्र में समानता

1. समानता 662

इकाई–2. : राज्य सरकार

2. स्वास्थ्य में सरकार की भूमिका 666
3. राज्य शासन कैसे काम करता है 673

इकाई–3. : लिंग बोध–जेंडर

4. लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना 679
5. औरतों ने बदली दुनिया 684

इकाई–4 : संचार माध्यम

6. संचार माध्यमों को समझना 689

इकाई–5 : बाजार

7. हमारे आस–पास के बाजार 695
8. बाजार में एक कमीज़ 702

हमारा पर्यावरण (भूगोल)

1. पर्यावरण 708
2. हमारी पृथ्वी के अंदर 712
3. हमारी बदलती पृथ्वी 716
4. वायु 722
5. जल 728
6. मानव–पर्यावरण अन्योन्यक्रिया : उष्णकटिबन्धीय एवं उपोष्ण प्रदेश 732
7. रेगिस्तान में जीवन 738

हमारा राजस्थान भाग–2

1. वन, वन्य जीव एवं संरक्षण 742
2. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 745
3. कृषि एवं सिंचाई 748
4. राजस्थान में कृषि विपणन 751
5. राजस्थान में व्यापार 754
6. राजस्थान के प्रमुख शासक 757
7. आजादी का आन्दोलन और राजस्थान 760
8. आजादी से पूर्व राजस्थान में सामाजिक–शैक्षणिक सुधार 765
9. संविधान निर्माण में राजस्थान का योगदान 769

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न 774–776

◆◆◆

ये हम नहीं कहते, जमाना कहता है

संजीव बुक्स है नं. 1

कक्षा 3 से एम.ए. के लिये

राजस्थान पत्रिका — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 22 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों की पहली पसंद संजीव बुक्स

जयपुर। नए घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़े और सरल भाषा के चलते संजीव बुक्स, इंग्लिश कोर्स, रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12वीं तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए संजीव बुक्स प्रकाशित की जा रही हैं। पुस्तकें नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। प्रत्येक विषय की पुस्तक को योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञ प्राध्यापकों से लिखवाया जाता है। विद्यार्थियों का कहना है कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। विद्यालय स्तर से लेकर कॉलेज स्तर तक संजीव बुक्स अपनी उत्कृष्ट पाठ्यसामग्री के आधार पर सर्वश्रेष्ठ सहायक पुस्तकें बनी हुई हैं।

दैनिक भास्कर — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। लाखों विद्यार्थी संजीव बुक्स की सहायता से अपनी सम्पूर्ण पढ़ाई कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किये जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

दैनिक नवज्योति — **राजस्थान का प्रमुख दैनिक**

जयपुर, 17 जनवरी , 2024

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव बुक्स

ब्यूरो, नवज्योति/जयपुर। अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आंकड़ों तथा सरल भाषा के चलते संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों की पहली पसंद बनी हुई हैं। संजीव बुक्स की लोकप्रियता के बारे में विद्यार्थियों से बात करने पर उन्होंने बताया कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आंकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। इसीलिए सभी विद्यार्थी सहायक पुस्तकों के रूप में संजीव बुक्स को ही खरीदना पसन्द करते हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल ने बताया कि कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स प्रकाशित किए जाते हैं जो कि अंग्रेजी विषय की सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तकें हैं। इसी प्रकार कक्षा 11 एवं 12 के साइन्स के विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकता को देखते हुए संजीव साइन्स की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर ऑल इन वन तथा कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं।

मित्तल बन्धुओं ने आगे बताया कि उनके द्वारा प्रकाशित संजीव बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णत: नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं।

प्रकाशक : **संजीव प्रकाशन, जयपुर**

English—Class 7

HONEYCOMB

1. Three Questions
[तीन प्रश्न]

—Leo Tolstoy

आपके पढ़ने से पूर्व—एक राजा के तीन प्रश्न हैं और वह उनका उत्तर ढूंढ़ रहा है। वे प्रश्न क्या हैं? क्या राजा को वह मिलता है जो वह चाहता है?

कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद

I

The thought came ..... every action. (Pages 7-8)

कठिन शब्दार्थ—thought (थॉट्) = विचार। **certain** (सट्न्) = निश्चित। **listen to** (लिसन टु) = सुनना। **therefore** (देअरफॉ(र)) = इसलिए। **messengers** (मेसिन्ज(र्)स) = दूत, संदेशवाहक। **throughout** (थ्रूआउट्) = सम्पूर्ण। **kingdom** (किङ्डम्) = राज्य। **promising** (प्रोमिसिङ्) = वादा करते हुए। **a large sum** (अ लाज् सम्) = एक बड़ी धन-राशि। **wise men** (वाइज् मेन्) = बुद्धिमान व्यक्ति। **answered** (आन्स(र्)ड) = उत्तर दिया। **questions** (क्वेस्चन्स) = प्रश्नों। **differently** (डिफ्रन्ट्लि) = अलग-अलग तरह से। **reply** (रिप्लाइ) = जवाब। **prepare** (प्रिपेअ(र)) = तैयार करना। **then** (देन्) = फिर। **follow** (फॉलो) = पालन करना। **strictly** (स्ट्रिक्ट्लि) = कठोरता से। **proper** (प्रॉप(र)) = उचित। **impossible** (इम्पॉसब्ल्) = असम्भव। **decide** (डिसाइड्) = निश्चित करना। **in advance** (इन् अड्वान्स्) = पहले से ही। **notice** (नोटिस्) = देखना। **was going on** (वाज गउइंग ऑन) = जारी था। **avoid** (अवॉइड्) = बचना। **foolish** (फूलिश्) = मूर्खता। **pleasures** (प्लेश(र्)स) = खुशियाँ। **whatever** (वॉट्एव(र)) = जो कुछ भी। **seemed** (सीम्ड) = प्रतीत हो। **necessary** (नेसेसरि) = आवश्यक। **yet** (येट्) = किन्तु। **needed** (नीडिड्) = आवश्यकता थी। **council** (काउन्स्ल्) = परिषद्। **act** (एक्ट्) = कार्य करना। **because** (बिकॉज्) = क्योंकि। **correctly** (कॅरेक्ट्लि) = ठीक से। **without** (विदाउट्) = के बिना। **action** (ऐक्शन्) = कार्य।

हिन्दी अनुवाद—एक बार एक राजा के दिमाग में यह विचार आया कि यदि वह तीन बातें जान जाए तो वह जीवन में कभी असफल नहीं होगा। ये तीन बातें थीं—किसी कार्य को आरम्भ करने का उचित समय क्या है? उसे किन लोगों की बात सुननी चाहिए? उसके करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य क्या है?

अत: राजा ने अपने सम्पूर्ण राज्य में दूत यह वादा करते हुए भेजे कि जो कोई भी इन तीन प्रश्नों का उत्तर देगा, वह उसे एक बड़ी धन-राशि (उपहारस्वरूप) देगा।

अनेक बुद्धिमान व्यक्ति राजा के पास आये किन्तु उन सभी ने राजा के प्रश्नों के अलग-अलग तरह से उत्तर दिये।

प्रथम प्रश्न के उत्तर में कुछ बुद्धिमान लोगों ने कहा कि राजा को एक उचित समय सारणी अवश्य ही तैयार करनी चाहिए और फिर इसका कठोरता से पालन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि केवल इस तरीके से ही राजा प्रत्येक कार्य को ठीक समय पर कर पायेगा। अन्य बुद्धिमान लोगों ने कहा कि किसी कार्य को करने के उचित समय का पहले से ही पता लगा लेना असम्भव था। वर्तमान में जारी सभी कार्यों को राजा को देखना चाहिए, मूर्खतापूर्ण खुशियों से बचना चाहिए तथा हमेशा उन कार्यों को करना चाहिए जो उस समय करने आवश्यक हों। फिर भी कुछ अन्य लोगों ने कहा कि राजा को बुद्धिमान व्यक्तियों की एक परिषद् की आवश्यकता है जो राजा को उचित समय पर कार्य करने में सहायता कर सके। इसका कारण यह था कि दूसरे अन्य लोगों की मदद के बिना प्रत्येक कार्य को करने का सही समय निर्धारित कर पाना किसी एक व्यक्ति के लिए असम्भव है।

But then others ..... breathed heavily. (Pages 8-9)

कठिन शब्दार्थ–urgent (अजन्ट्) = अत्यावश्यक। **decision** (डिसिशन्) = निर्णय। **future** (फ्यूच(र)) = भविष्य। **magicians** (मजिशन्ज) = जादूगरों। **councillors** (काउन्सल(र्)स) = सलाहकारों। **priests** (प्रीस्ट्स) = पुजारियों/पुरोहितों। **a few** (अ फ्यु) = कुछ। **chose** (चोज) = चुना। **soldiers** (सोल्ज(र्)स) = सैनिकों। **science** (साइन्स्) = विज्ञान। **fighting** (फाइटिङ्) = लड़ाई। **religious** (रिलिजस्) = धार्मिक। **worship** (वशिप्) = पूजा। **satisfied** (सैटिस्फाइड्) = संतुष्ट। **reward** (रिवॉर्ड्) = इनाम। **instead** (इन्स्टेड) = के बजाय। **seek** (सीक्) = लेना। **advice** (अड्वाइस्) = सलाह। **hermit** (हमिट्) = संन्यासी। **widely** (वाइड्लि) = दूर-दूर तक। **known for** (नोन् फॉ(र)) = प्रसिद्ध होना। **wisdom** (विज्डम्) = बुद्धिमानी। **wood** (वुड्) = जंगल/वन। **put on** (पुट् ऑन्) = पहनना। **ordinary** (ऑर्डिन्रि) = साधारण। **reached** (रीच्ट) = पहुँचा। **bodyguard** (बॉडिगार्ड) = अंगरक्षक। **digging** (डिगिङ्) = खोदते हुए। **ground** (ग्राउन्ड्) = जमीन। **in front of** (इन् फ्रन्ट् ऑफ्) = के सामने। **greeted** (ग्रीटिड) = अभिवादन किया। **continued** (कन्टिन्यूड) = जारी रखा। **breathed** (ब्रीद्ड) = श्वांस ली। **heavily** (हेविलि) = जोर-जोर से।

हिन्दी अनुवाद–किन्तु फिर अन्य लोगों ने कहा कि कुछ ऐसे कार्य भी हो सकते हैं जो अत्यावश्यक हों। ये कार्य सलाहकार परिषद् के निर्णय तक रोके नहीं रखे जा सकते हैं। किसी कार्य को करने के उचित समय की निश्चितता के लिए भविष्य की जानकारी आवश्यक होती है। और केवल जादूगर ही यह कार्य कर सकते हैं। राजा को इसलिए जादूगरों के पास जाना पड़ेगा।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में कुछ ने कहा कि राजा के लिए सर्वाधिक आवश्यक लोग उसके सलाहकार थे। जबकि अन्य दूसरे ने कहा कि पुरोहितों की सर्वाधिक आवश्यकता है। कुछ अन्य दूसरे ने चिकित्सकों की आवश्यकता होने को चुना। और कुछ अन्य लोगों ने कहा कि राजा के सैनिक सर्वाधिक आवश्यक हैं।

तीसरे प्रश्न के उत्तर में कुछ लोगों ने विज्ञान के लिए कहा। दूसरे अन्य लोगों ने लड़ाई को चुना तथा कुछ अन्य ने धार्मिक पूजा को चुना।

चूँकि राजा के प्रश्नों के उत्तर बहुत ही भिन्न-भिन्न थे इसलिए राजा उनसे सन्तुष्ट नहीं हुआ और कोई इनाम नहीं दिया। इसके बजाय उसने एक एकान्तवासी संन्यासी की सलाह लेने का निश्चय किया जो कि अपनी बुद्धिमानी के लिए दूर-दूर तक जाना जाता था।

वह संन्यासी एक जंगल में रहता था जिसे छोड़कर वह कभी बाहर नहीं जाता था। वह केवल साधारण लोगों से ही मिलता था इसलिए राजा ने भी साधारण वस्त्र धारण कर लिए। उस संन्यासी की कुटिया में पहुँचने से पहले राजा ने अपने घोड़े को अपने अंगरक्षक के पास छोड़ दिया और अकेले ही आगे गया।

जैसे ही राजा उस संन्यासी की झोंपड़ी के पास आया उसने संन्यासी को अपनी झोंपड़ी के सामने जमीन खोदते हुए देखा। उसने राजा का अभिवादन किया और जमीन खोदना जारी रखा। संन्यासी वृद्ध एवं कमजोर था और चूँकि वह कठिन परिश्रम कर रहा था इसलिए वह जोर-जोर से साँस ले रहा था।

The king went ..... said the hermit. (Pages 9-10)

कठिन शब्दार्थ–affairs (अफेअ(र्)स) = कार्य। **spade** (स्पेड्) = फावड़ा। **beds** (बेड्ज) = क्यारियाँ। **stopped** (स्टॉप्ट) = रुका। **repeated** (रिपीटिड्) = दोहराये। **stood up** (स्टुड् अप्) = खड़ा हो गया। **stretching out** (स्ट्रेचिङ् आउट्) = फैलाते हुए। **passed** (पास्ट) = गुजर गया। **stuck** (स्टक्) = अटका। **return** (रिटन्) = लौटना।

हिन्दी अनुवाद–राजा संन्यासी के पास गया और बोला, "हे बुद्धिमान संन्यासी, मैं तीन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए आपके पास आया हूँ—मैं सही वक्त पर सही कार्य करना कैसे जान सकता हूँ? वे कौन लोग हैं जिनकी मुझे सर्वाधिक आवश्यकता है? और कौनसे कार्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं?"

संन्यासी ने राजा की बात सुनी लेकिन बोला कुछ नहीं। उसने खुदाई जारी रखी। 'आप थक गये हैं', राजा ने कहा, 'लाइए, फावड़ा मुझे दीजिए और आपके स्थान पर कार्य करने दीजिए।'

राजा को अपना फावड़ा देते हुए उस संन्यासी ने कहा, 'धन्यवाद।' फिर वह जमीन पर बैठ गया।

जब राजा दो क्यारियाँ खोद चुका था तो वह रुका और अपने प्रश्न दोहराये। संन्यासी ने कोई उत्तर नहीं दिया, तथापि वह खड़ा हो गया, फावड़े के लिए अपने हाथ फैलाते हुए उसने कहा, 'अब आप आराम करें और मुझे कार्य करने दें।'

हिन्दी–कक्षा 7

वसंत : भाग-2

पाठ 1 : हम पंछी उन्मुक्त गगन के

(शिवमंगल सिंह 'सुमन')

पाठ-परिचय–इस कविता के रचयिता शिवमंगल सिंह 'सुमन' हैं। इसमें अन्य सभी सुविधाओं की तुलना में पक्षियों के माध्यम से आजादी को श्रेष्ठ बताया गया है।

सप्रसंग व्याख्याएँ–

(1) **हम पंछी उन्मुक्त गगन के**
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।
हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटौरी की मैदा से।

कठिन-शब्दार्थ–उन्मुक्त = आजाद, खुले हुए। **गगन** = आकाश। **पिंजरबद्ध** = पिंजरे में कैद होकर। **कनक-तीलियाँ** = सोने की छड़ें। **पुलकित** = रोमांचित। **कटुक** = कड़वी। **निबौरी** = नीम का फल।

प्रसंग–यह पद्यांश श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' शीर्षक कविता से लिया गया है। यहाँ पिंजरे में बन्द पक्षी मनुष्य से अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हुए कहते हैं।

व्याख्या–पक्षी कहते हैं कि हम खुले आसमान में उड़ने वाले आजाद पक्षी हैं। इसलिए पिंजरे में कैद होकर हम अपना मधुर गान नहीं गा सकेंगे। भले ही वह पिंजरा सोने का बना हुआ क्यों न हो? उल्लास में खुले हुए हमारे पंख पिंजरे में लगी इन सोने की तीलियों (सलाखों) से टकराकर टूट जाएँगे।

हम पक्षी नदियों और झरनों का बहता जल पीने वाले हैं। हम पिंजरे में कैद होकर भूखे-प्यासे रहकर मर जाएँगे। हमारे लिए पिंजरे में सोने की कटोरी में रखे हुए मैदा से तो अच्छी नीम की कड़वी निबौरी है। भाव यह है कि पिंजरे में कैद होकर सोने की कटोरी में रखी मैदा खाने से आजाद होकर खुले आकाश में उड़ना अधिक अच्छा है।

(2) **स्वर्ण-शृंखला के बंधन में**
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरू की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

कठिन-शब्दार्थ–स्वर्ण-शृंखला = सोने की जंजीर। **गति** = चाल। **तरु** = पेड़। **फुनगी** = पेड़ का सबसे ऊपरी भाग। **अरमान** = इच्छा। **नभ** = आकाश। **सीमा** = सरहद, किनारा। **चुगते** = चुगना, खाना। **तारक** = तारे।

प्रसंग–यह पद्यांश 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' हैं। यहाँ पक्षी अपने बंधनयुक्त जीवन की परेशानियों और अपनी इच्छाओं को व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या–पक्षी कहते हैं कि सोने की इन जंजीरों में बँधकर हम अपनी स्वाभाविक चाल और उड़ने के ढंग आदि सभी को भूल गये हैं। पेड़ों की फुनगी पर बैठना और पंखों के सहारे झूलना, अब तो हमारे लिए बस सपने की बात बनकर रह गयी है।

इस बंधन में पड़ने से पहले हमारी भी यही इच्छा थी कि हम इस खुले नीले आसमान की सीमा तक उड़ें और सूर्य की लाल किरणों के समान अपनी चोंच खोलकर आकाश में छाये तारों रूपी अनार के दाने चुगते रहें।

(3) होती सीमा हीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

कठिन-शब्दार्थ–सीमा हीन = जिसकी सीमा नहीं, असीम। **क्षितिज** = जहाँ धरती और आकाश मिलते हैं। **होड़ा-होड़ी** = एक-दूसरे से आगे बढ़ने की चाह, प्रतिस्पर्द्धा। **तनती साँसें** = प्राणांत के समय टूटती साँसें। **नीड़** = घोंसला। **आश्रय** = सहारा। **छिन्न-भिन्न** = नष्ट-भ्रष्ट। **आकुल-उड़ान** = उड़ने की अधीरता। **विघ्न** = बाधा।

प्रसंग–यह पद्यांश श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' शीर्षक कविता से लिया गया है। पक्षी यहाँ अपने भावों को व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या–पक्षी कहते हैं कि स्वतन्त्र रहते हुए आसमान की ऊँचाइयों को छूते हुए उनके पंखों में इस प्रकार की होड़ लग जाती कि उड़ते-उड़ते या तो वे क्षितिज को पा जाते या फिर अपने प्राण गँवा देते।

पक्षी कहते हैं कि चाहे उन्हें रहने के लिए घोंसला न दो। टहनी का आश्रय भी तहस-नहस कर दो, लेकिन ईश्वर ने उन्हें पंख दिए हैं तो उनकी उड़ान में बाधा न डालो। उन्हें आजादी के साथ उड़ने दो।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

कविता से–

प्रश्न 1. हर तरह की सुख-सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते?

उत्तर–हर तरह की सुख-सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में इसलिए बंद नहीं रहना चाहते, क्योंकि उन्हें बंधन में रहना पसन्द नहीं। वे अपनी इच्छा के अनुसार खुले आसमान में ऊँची उड़ान भरना, बहता जल पीना और निबौरियाँ खाना ही चाहते हैं।

प्रश्न 2. पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं?

उत्तर–पक्षी उन्मुक्त रहकर आकाश की सीमा जानना चाहते हैं, क्षितिज से प्रतियोगिता करना चाहते हैं, बहता जल पीकर, कड़वी निबौरियाँ खाकर, पेड़ों की ऊँची टहनियों पर झूलकर और अपनी चोंच से आकाश के अनार के दाने रूपी तारे चुगकर अपनी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं।

प्रश्न 3. भाव स्पष्ट कीजिए–

''या तो क्षितिज मिलन बन जाता। या तनती साँसों की डोरी।''

उत्तर–भाव–उपर्युक्त पंक्ति में पक्षी अपनी हार्दिक इच्छा प्रकट कर कहता है कि यदि मैं आजाद होता तो उस असीम क्षितिज से मेरी होड़ा-होड़ी हो जाती। मैं अपने पंखों से उड़कर या तो उस क्षितिज से जाकर मिल जाता या फिर मेरा प्राणान्त हो जाता।

कविता से आगे–

प्रश्न 1. बहुत से लोग पक्षी पालते हैं–

(क) पक्षियों को पालना उचित है अथवा नहीं? अपने विचार लिखिए।

(ख) क्या आपने या आपकी जानकारी में किसी ने कभी कोई पक्षी पाला है? उसकी देखरेख किस प्रकार की जाती होगी, लिखिए।

उत्तर–(क) भले ही लोग अपने शौक के लिए पक्षी पालते हों, पर हमारे विचार से पक्षियों को पालना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है, क्योंकि भगवान ने पक्षियों को स्वच्छन्दता के साथ जीवन जीने के लिए बनाया है। इसीलिए उन्हें उड़ने के लिए पंख दिए। इसी कारण अपनी इच्छा से ऊँची से ऊँची उड़ान भरना, पेड़ों पर घोंसले बनाकर रहना, बहता पानी पीना और फल-फूल खाना उनकी प्रवृत्ति है। तो भला पक्षी पिंजरे में कैद रहकर कैसे खुश रह सकता है। हमें उनकी आजादी में बाधक नहीं बनना चाहिए।

उत्तर–(ख) हाँ, हमने भी एक बार तोता पाला था। मेरे पिताजी ने उसे एक बहेलिया से खरीदा था। पिताजी उसके

संस्कृत–कक्षा 7

रुचिरा-द्वितीयो भागः

प्रथमः पाठः–सुभाषितानि

(सुन्दर वचन)

पाठ-सार–संस्कृत-साहित्य सुभाषितों (सुन्दर वचनों) का भण्डार है। प्रस्तुत पाठ में अत्यन्त सरल एवं महत्त्वपूर्ण कुल छः श्लोक हैं, जिनमें जीवनोपयोगी सुन्दर-वचन संकलित हैं।

पाठ के कठिन-शब्दार्थ–पृथिव्याम् = धरती पर। **सुभाषितम्** = सुन्दर वचन। **मूढैः** = मूर्खों के द्वारा। **पाषाणखण्डेषु** = पत्थर के टुकड़ों में। **रत्नसंज्ञा** = रत्न का नाम। **विधीयते** = किया/समझा जाता है। **धार्यते** = धारण किया जाता है। **तपते** = जलता है। **वाति** = बहता है/बहती है। **वायुश्च** (वायुः + च) = पवन भी। **प्रतिष्ठितम्** = स्थित है। **तपसि** = तपस्या में। **शौर्ये** = बल में। **नये** = नीति में। **विस्मयः** = आश्चर्य। **बहुरत्ना** = अनेक रत्नों वाली। **वसुन्धरा** = पृथिवी। **सद्भिरेव** (सद्भिः+एव) = सज्जनों के साथ ही। **सहासीत** (सह+आसीत) = साथ बैठना चाहिए। **कुर्वीत** = करना चाहिए। **सद्भिर्विवादम्** (सद्भिः+विवादम्) = सज्जनों के साथ झगड़ा। **क्षमावशीकृतिर्लोके** (क्षमावशीकृतिः+लोके) = संसार में क्षमा (सबसे बड़ा) वशीकरण है। **नासद्भिः** (न+असद्भिः) = असज्जन लोगों के साथ नहीं। **धनधान्यप्रयोगेषु** = धनधान्य के प्रयोग में। **संग्रहेषु** = संग्रहों में, संचय करने में। **त्यक्तलज्जः** = संकोच या भीरुता को छोड़ने वाला। **शान्तिखड्गः** = शान्ति की तलवार।

पाठ के श्लोकों का अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–

(1)

पृथिव्यां त्रीणि ..... विधीयते॥

अन्वयः–पृथिव्यां जलम्, अन्नम्, सुभाषितं त्रीणि (एव) रत्नानि (सन्ति)। मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में वास्तविक रूप से रत्न क्या हैं, इसके बारे में कहा गया है कि सभी के लिए लाभदायक एवं उपयोगी जल, अन्न और सुन्दर वचन–ये तीन ही इस पृथ्वी पर रत्न हैं। हीरे आदि पत्थर के टुकड़ों को तो मूर्ख लोग ही रत्न नाम से कहते हैं। अर्थात् मूर्ख रत्न के वास्तविक महत्त्व को नहीं जानते हैं।

(2)

सत्येन धार्यते ..... प्रतिष्ठितम्॥

अन्वयः–पृथ्वी सत्येन धार्यते। रविः सत्येन तपते। वायुश्च सत्येन वाति। (अतः) सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में सत्य के महत्त्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सत्य से ही पृथ्वी धारण की जाती है, सत्य से ही सूर्य तपता है, सत्य से ही वायु बहती है तथा संसार में जो भी कुछ है वह सब सत्य पर ही निर्भर है।

(3)

दाने तपसि शौर्ये ..... वसुन्धरा॥

अन्वयः–दाने तपसि शौर्ये विज्ञाने विनये नये च विस्मयः न कर्त्तव्यः। हि वसुन्धरा बहुरत्ना (वर्तते)।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में 'बहुरत्ना वसुन्धरा' इस सूक्ति के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि यह भूमि अनेक रत्नों वाली है। यहाँ एक से बढ़कर एक दानी, तपस्वी, बलशाली, वैज्ञानिक, विनम्र तथा नीतिज्ञ हैं, अतः इनके कार्य दान, तपस्या आदि में आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ये सभी इस पृथ्वी के अमूल्य रत्न हैं।

(4)

सद्भिरेव सहासीत ..... किञ्चिदाचरेत्॥

अन्वयः–सद्भिः सह इव आसीत। सद्भिः सङ्गतिं कुर्वीत। सद्भिः (सह) विवादं मैत्री च (कुर्वीत)। असद्भिः (सह) किञ्चिद् न आचरेत्।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में सत्संगति के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा गया है कि सज्जनों के साथ ही रहना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति करनी चाहिए तथा सज्जनों के साथ ही मित्रता अथवा विवाद करना चाहिए, किन्तु दुर्जनों के साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं रखना चाहिए, सज्जनों का साथ हर प्रकार से लाभदायक होता है, किन्तु दुर्जनों की संगति सर्वथा हानिकारक ही होती है।

(5)

धनधान्यप्रयोगेषु ..... सुखी भवेत्॥

अन्वयः–धनधान्यप्रयोगेषु, विद्यायाः संग्रहेषु च आहारे च व्यवहारे त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में संकोच अथवा लज्जा कहाँ नहीं करनी चाहिए, इसका सदुपदेश देते हुए कहा गया है कि धन-धान्य के प्रयोग में, विद्या-प्राप्ति में, भोजन में तथा व्यवहार में संकोच या लज्जा को छोड़ देना चाहिए, जिससे व्यक्ति सुखी हो जाता है। इनमें लज्जा करने से व्यक्ति को कष्ट उठाना पड़ता है। जैसे भोजन के समय संकोच करने से व्यक्ति भूखा ही रह जाता है।

(6)

क्षमावशीकृतिर्लोके ..... करिष्यति दुर्जनः॥

अन्वयः–लोके क्षमा वशीकृतिः, क्षमया किं न साध्यते? यस्य करे शान्तिखड्गः (अस्ति), दुर्जनः (तस्य) किं करिष्यति?

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–प्रस्तुत श्लोक में क्षमाशीलता के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा गया है कि क्षमाशीलता से संसार में सभी को वश में तथा सभी कार्यों को सिद्ध किया जा सकता है। शान्ति (क्षमा) रूपी तलवार होने पर दुर्जन व्यक्ति भी उसका कुछ भी अहित नहीं कर सकता है। अर्थात् क्षमाशीलता एक सर्वश्रेष्ठ शस्त्र है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।

(सभी श्लोकों का सस्वर गान कीजिए।)

उत्तर–नोट–पाठ के सभी श्लोकों का अध्यापकजी की सहायता से गान कीजिए।

प्रश्न 2. यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत–

(यथा-योग्य श्लोकों के अंशों का मिलान कीजिए-)

क	ख
धनधान्यप्रयोगेषु	नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यः	त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
सत्येन धार्यते पृथ्वी	बहुरत्ना वसुन्धरा।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च	विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च	सत्येन तपते रविः।

उत्तरम्–(i) धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।

(ii) विस्मयो न हि कर्त्तव्यः बहुरत्ना वसुन्धरा।

(iii) सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।

(iv) सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।

(v) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

प्रश्न 3. एकपदेन उत्तरत–(एक पद में उत्तर दीजिए-)

(क) पृथिव्यां कति रत्नानि?

(ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?

(ग) पृथिवी केन धार्यते?

(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?

(ङ) लोके वशीकृतिः का?

उत्तराणि–(क) त्रीणि (ख) पाषाणखण्डेषु (ग) सत्येन (घ) सद्भिः (ङ) क्षमा।

प्रश्न 4. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(रेखांकित पदों को अधिकृत करके प्रश्न-निर्माण कीजिए-)

(क) सत्येन वाति वायुः।

उत्तरम्–केन वाति वायुः?

(ख) सद्भिः एव सहासीत।

उत्तरम्–कैः एव सहासीत?

(ग) वसुन्धरा बहुरत्ना भवति।

उत्तरम्–का बहुरत्ना भवति?

(घ) विद्यायाः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

विज्ञान–कक्षा 7

1. पादपों में पोषण

पाठ-सार

(1) सभी जीवों के लिए भोजन आवश्यक है। पादप अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, परन्तु मानव सहित अन्य सभी प्राणी अपना भोजन पादप अथवा पादपों को अपना भोजन बनाने वाले जंतुओं से प्राप्त करते हैं।

(2) भोजन के मुख्य घटक कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन और खनिज लवण होते हैं जो पोषक पदार्थ कहलाते हैं। सभी जीव इनका उपयोग अपनी वृद्धि एवं शरीर के रख-रखाव के लिए तथा आवश्यक ऊर्जा प्राप्ति के लिए करते हैं।

(3) हरे पादप प्रकाश-संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, इसलिए ये स्वपोषी कहलाते हैं।

(4) प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के लिए क्लोरोफिल, सूर्य का प्रकाश, कार्बन डाई-ऑक्साइड एवं जल अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं।

(5) प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में क्लोरोफिल की सहायता से पत्तियाँ सौर ऊर्जा का संचयन करती हैं।

(6) कार्बोहाइड्रेट जैसे जटिल रासायनिक पदार्थ प्रकाश संश्लेषण के उत्पाद हैं।

(7) प्रकाश संश्लेषण में ऑक्सीजन निष्कासित होती है, जिसका उपयोग सभी जीवों द्वारा श्वसन में किया जाता है।

(8) जंतु एवं अधिकतर अन्य जीव पादपों द्वारा संश्लेषित भोजन ग्रहण करते हैं। इस कारण वे विषमपोषी कहलाते हैं।

(9) कवक अपना पोषण मृत एवं अपघटित जैव पदार्थों से प्राप्त करते हैं, इस कारण मृतजीवी कहलाते हैं। इसके विपरीत अमरबेल जैसे पादप परजीवी कहलाते हैं। ये जिन पादपों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं, वह परपोषी पादप कहलाते हैं।

(10) पादपों द्वारा लगातार उपयोग किए जाने के कारण मृदा में नाइट्रोजन, पोटैशियम, फॉस्फोरस जैसे पादप पोषकों की मात्रा धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसलिए मृदा में इन पोषकों की पुनः पूर्ति के लिए उर्वरक तथा खाद मिलाने की आवश्यकता होती है।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 1

प्रश्न 1. पादप अपना भोजन किस प्रकार बनाते हैं?

उत्तर—पादप सूर्य के प्रकाश एवं क्लोरोफिल की उपस्थिति में, भूमि से प्राप्त जल एवं खनिज तथा वायुमंडल से प्राप्त कार्बन डाई-ऑक्साइड की सहायता से अपना भोजन बनाते हैं। भोजन निर्माण का कार्य मुख्यतः पादपों की हरी पत्तियों में होता है।

प्रश्न 2. पादपों की तरह हमारा शरीर भी कार्बन डाई-ऑक्साइड, जल एवं खनिज से अपना भोजन स्वयं क्यों नहीं बना सकता?

उत्तर—पादपों की तरह हमारा शरीर भी कार्बन डाई-ऑक्साइड, जल एवं खनिज से अपना भोजन स्वयं नहीं बना सकता क्योंकि हमारे शरीर में क्लोरोफिल नामक हरा वर्णक नहीं पाया जाता है।

प्रश्न 3. जड़ द्वारा अवशोषित जल एवं खनिज पत्ती तक किस प्रकार पहुँचते हैं?

उत्तर—जड़ द्वारा अवशोषित जल एवं खनिज पत्ती तक वाहिकाओं द्वारा पहुँचते हैं। ये वाहिकाएँ नली के समान होती हैं और जड़, तना, शाखाओं एवं पत्तियों तक फैली होती हैं। पोषकों को पत्तियों तक पहुँचाने के लिए ये वाहिकाएँ एक सतत मार्ग बनाती हैं।

पृष्ठ 2

प्रश्न 4. पत्तियों में ऐसी क्या विशेषता है कि वे खाद्य पदार्थों का संश्लेषण कर सकती हैं परन्तु पादप के दूसरे भाग नहीं?

उत्तर—पादपों के दूसरे भागों की तुलना में पत्तियों में एक हरा वर्णक 'क्लोरोफिल' पाया जाता है, जो खाद्य पदार्थों के संश्लेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पृष्ठ 3

प्रश्न 5. कुछ पादपों की पत्तियाँ गहरी लाल, बैंगनी अथवा भूरे रंग की होती हैं। क्या इन पत्तियों में भी प्रकाश संश्लेषण होता है?

उत्तर–हाँ, इन पत्तियों में भी प्रकाश संश्लेषण होता है, क्योंकि इनमें भी क्लोरोफिल होता है। परन्तु इन पत्तियों में उपस्थित लाल, बैंगनी, भूरे अथवा अन्य वर्णक (रंग) क्लोरोफिल के हरे रंग को ढ़क लेते हैं।

पृष्ठ 5

प्रश्न 6. क्या हमारा रक्त चूसने वाले मच्छर, खटमल, जूं एवं जोंक जैसे जीव भी परजीवी हैं?

उत्तर–हमारा रक्त चूसने वाले जूं एवं जोंक परजीवी हैं, परन्तु मच्छर एवं खटमल परजीवी नहीं हैं, क्योंकि ये पोषण के लिए नहीं, बल्कि अपने अंडों को सेने के लिए रक्त चूसते हैं।

प्रश्न 7. यदि घटपर्णी हरा होता है और प्रकाश संश्लेषण संपादित करता है, तो यह कीटों का भक्षण क्यों करता है?

उत्तर–घटपर्णी पादप को अपनी आवश्यकतानुसार मृदा से सभी पोषक तत्त्व नहीं मिल पाते हैं, इसलिए यह पादप कीटों का भक्षण करता है।

प्रश्न 8. मृतजीवी अपना भोजन किस प्रकार प्राप्त करते हैं?

उत्तर–मृतजीवी मृत एवं विघटनकारी (सड़ने वाली) वस्तुओं की सतह पर कुछ पाचक रसों का स्राव करते हैं, जिससे वे विलयन रूप में बदल जाते हैं। इसके बाद वे इस विलयन का ही भोजन के रूप में अवशोषण करते हैं।

पृष्ठ 6

प्रश्न 9. वर्षा ऋतु में कवक अचानक कैसे प्रकट हो जाते हैं?

उत्तर–सामान्यत: कवकों के बीजाणु वायु में उपस्थित होते हैं। जब वे किसी ऐसे जैव पदार्थ अथवा उत्पाद पर बैठते हैं, जो नम एवं उष्ण हों, तो वे अंकुरित होकर नए कवक को जन्म देते हैं। इसी कारण कवकों की वृद्धि के लिए वर्षा ऋतु सबसे अच्छी परिस्थितियाँ प्रदान करती है। वर्षा ऋतु में अनेक वस्तुएँ कवकों की वृद्धि के कारण नष्ट अथवा अनुपयोगी हो जाती हैं।

प्रश्न 10. क्या कवक रोगकारक भी होते हैं?

उत्तर–हाँ, कुछ कवक रोगकारक होते हैं। इनसे त्वचा रोग, आंत रोग आदि हो सकते हैं। परन्तु कुछ कवकों का उपयोग औषधि निर्माण में भी किया जाता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. जीवों को खाद्य की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर–सभी जीवों को खाद्य की आवश्यकता निम्नलिखित कार्यों के लिए होती है–

(i) शरीर के निर्माण के लिए,
(ii) शरीर की वृद्धि के लिए,
(iii) क्षतिग्रस्त भागों के रखरखाव के लिए, तथा
(iv) विभिन्न जैव प्रक्रमों के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्ति के लिए।

प्रश्न 2. परजीवी एवं मृतजीवी में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–

परजीवी	मृतजीवी
(i) ये अपना भोजन सजीवों से प्राप्त करते हैं।	(i) ये अपना भोजन मृत एवं विघटनकारी (सड़ी-गली) वस्तुओं से प्राप्त करते हैं।
(ii) ये सामान्यत: परपोषी के ऊपर या भीतर रहते हैं।	(ii) ये हमेशा मृत एवं सड़ी-गली वस्तुओं के ऊपर रहते हैं।
(iii) अमरबेल, जोंक, जूं जैसे पादप एवं जीव परजीवी के प्रमुख उदाहरण हैं।	(iii) कवक मृतजीवी के उदाहरण हैं।

प्रश्न 3. आप पत्ती में मंड (स्टार्च) की उपस्थिति का परीक्षण कैसे करेंगे?

उत्तर–मंड (स्टार्च) का परीक्षण–पत्तियों पर आयोडीन विलयन की कुछ बूँदें डालकर हम मंड (स्टार्च) की उपस्थिति का परीक्षण कर सकते हैं।

जब पत्तियों पर आयोडीन के तनु विलयन की कुछ बूँदें डालते हैं, तब आयोडीन के मंड के सम्पर्क में आने पर, उस स्थान का रंग गहरा नीला या काला हो जाता है। इस प्रकार पत्ती में मंड (स्टार्च) की उपस्थिति का परीक्षण कर सकते हैं।

प्रश्न 4. हरे पादपों में खाद्य संश्लेषण प्रक्रम का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर–हरे पादपों में खाद्य संश्लेषण प्रक्रम–हरे पादपों में खाद्य संश्लेषण प्रक्रम प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा संपन्न होता है।

प्रकाश संश्लेषण के दौरान पत्ती की क्लोरोफिल युक्त कोशिकाएँ, सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में, कार्बन डाई-ऑक्साइड और जल से कार्बोहाइड्रेट का संश्लेषण करती हैं। इस प्रक्रिया को निम्न समीकरण द्वारा दर्शा सकते हैं—

कार्बन डाई-ऑक्साइड + जल

$$\xrightarrow[\text{क्लोरोफिल}]{\text{सूर्य का प्रकाश}} \text{कार्बोहाइड्रेट} + \text{ऑक्सीजन}$$

इस प्रक्रिया में ऑक्सीजन निर्मुक्त होती है। कार्बोहाइड्रेट अंत में मंड (स्टार्च) में परिवर्तित हो जाते हैं। पत्ती में स्टार्च की उपस्थिति प्रकाश संश्लेषण प्रक्रम का संपन्न होना दर्शाता है। स्टार्च भी एक प्रकार का कार्बोहाइड्रेट ही होता है।

गणित–कक्षा 7

1. पूर्णांक

मुख्य बिन्दु

1. पूर्णांक योग एवं व्यवकलन (बाकी) दोनों के लिए संवृत (closed) होते हैं, अर्थात् किन्हीं भी दो पूर्णांकों a तथा b के लिए $a + b$ तथा $a - b$ दोनों पूर्णांक होते हैं।
2. पूर्णांकों के लिए योग क्रमविनिमेय है, अर्थात् सभी पूर्णांकों a तथा b के लिए, $a + b = b + a$ होता है।
3. पूर्णांकों के लिए योग साहचर्य है, अर्थात् सभी पूर्णांकों a, b तथा c के लिए $(a + b) + c = a + (b + c)$ होता है।
4. योग के अन्तर्गत पूर्णांक शून्य तत्समक है, अर्थात् किसी भी पूर्णांक a के लिए, $a + 0 = 0 + a = a$ होता है।
5. एक धनात्मक एवं एक ऋणात्मक पूर्णांक का गुणनफल एक ऋणात्मक पूर्णांक होता है, जबकि दो ऋणात्मक पूर्णांकों का गुणनफल एक धनात्मक पूर्णांक होता है।
6. ऋणात्मक पूर्णांकों की संख्या सम होने पर उनका गुणनफल धनात्मक होता है जबकि यह संख्या विषम होने पर उनका गुणनफल ऋणात्मक होता है।
7. गुणन के अन्तर्गत पूर्णांकों के गुण—
   (i) गुणन के अन्तर्गत पूर्णांक संवृत होते हैं, अर्थात् किन्हीं दो पूर्णांकों a तथा b के लिए $a \times b$ एक पूर्णांक होता है।
   (ii) पूर्णांकों के लिए गुणन क्रमविनिमेय होता है, अर्थात् किन्हीं दो पूर्णांकों a तथा b के लिए $a \times b = b \times a$ होता है।
   (iii) गुणन के अन्तर्गत पूर्णांक 1, तत्समक है, अर्थात् किसी भी पूर्णांक a के लिए $1 \times a = a \times 1 = a$ होता है।
   (iv) पूर्णांकों के लिए गुणन साहचर्य होता है, अर्थात् किन्हीं तीन पूर्णांकों a, b तथा c के लिए, $(a \times b) \times c = a \times (b \times c)$ होता है।
8. योग एवं गुणन के अन्तर्गत पूर्णांक वितरण गुण भी दर्शाते हैं, अर्थात् किन्हीं तीन पूर्णांकों a, b तथा c के लिए, $a \times (b + c) = a \times b + a \times c$ होता है।
9. योग एवं गुणन के अन्तर्गत क्रमविनिमेयता, सहचारिता और वितरणता के गुण हमारे परिकलन को आसान बनाते हैं।
10. जब एक धनात्मक पूर्णांक को एक ऋणात्मक पूर्णांक से भाग दिया जाता है या जब एक ऋणात्मक पूर्णांक को एक धनात्मक पूर्णांक से भाग दिया जाता है, तो प्राप्त भागफल एक ऋणात्मक पूर्णांक होता है।
11. एक ऋणात्मक पूर्णांक को दूसरे ऋणात्मक पूर्णांक से भाग देने पर प्राप्त भागफल एक धनात्मक पूर्णांक होता है।
12. किसी भी पूर्णांक a के लिए—
   (i) $a \div 0$ परिभाषित नहीं है। (ii) $a \div 1 = a$ है।
   (iii) $0 \div a = 0$ (यदि $a \neq 0$)।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ 4 **प्रयास कीजिए**

प्रश्न 1. एक ऐसा पूर्णांक युग्म लिखिए जिसके योग से हमें निम्नलिखित प्राप्त होता है :

(a) एक ऋणात्मक पूर्णांक

(b) शून्य

(c) दोनों पूर्णांकों से छोटा एक पूर्णांक

(d) दोनों पूर्णांकों में से केवल किसी एक से छोटा पूर्णांक

(e) दोनों पूर्णांकों से बड़ा एक पूर्णांक।

हल—(a) $-3 + (-4) = -3 - 4 = -7$ (एक ऋणात्मक पूर्णांक)

(b) $-10 + 10 = 0$ (शून्य)

(c) $-5 + (-3) = -5 - 3 = -8$ (यह दोनों पूर्णांकों से छोटा है)

(d) $9 + (-4) = 9 - 4 = 5$ (केवल 9 से छोटा पूर्णांक)

(e) $5 + 3 = 8$ (दोनों पूर्णांकों से बड़ा पूर्णांक)

प्रश्न 2. एक ऐसा पूर्णांक युग्म लिखिए जिसके अन्तर से हमें निम्नलिखित प्राप्त होता है :

(a) एक ऋणात्मक पूर्णांक

(b) शून्य

(c) दोनों पूर्णांकों से छोटा एक पूर्णांक

(d) दोनों पूर्णांकों में से केवल किसी एक से बड़ा पूर्णांक

(e) दोनों पूर्णांकों से बड़ा एक पूर्णांक

हल—(a) -8 तथा 5

$(-8) - (5) = -8 - 5 = -13$ (एक ऋणात्मक पूर्णांक)

(b) 4 तथा 4

$4 - 4 = 0$ (शून्य)

(c) 9 तथा 7

$9 - 7 = 2$ (दोनों पूर्णांकों से छोटा एक पूर्णांक)

(d) 6 तथा 2

$6 - 2 = 4$ (दोनों पूर्णांकों में से केवल किसी एक से बड़ा पूर्णांक)

(e) 3 तथा -7

$3 - (-7) = 3 + 7 = 10$ (दोनों पूर्णांकों से बड़ा एक पूर्णांक)

पृष्ठ 6 प्रयास कीजिए

प्रश्न—संख्या रेखा का उपयोग करते हुए, ज्ञात कीजिए :

(i) $4 \times (-8)$ **(ii) $8 \times (-2)$**

(iii) $3 \times (-7)$ **(iv) $10 \times (-1)$**

हल—(i) $4 \times (-8) = (-8) + (-8) + (-8) + (-8)$

इसको हम संख्या रेखा पर निम्न प्रकार से प्रदर्शित कर सकते हैं :

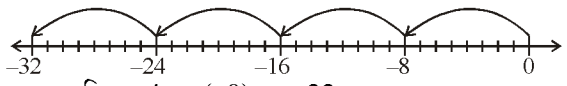

इसलिए, $4 \times (-8) = -32$

(ii) $8 \times (-2)$ $= (-2) + (-2) + (-2) + (-2) + (-2) + (-2) + (-2) + (-2)$

इसे हम निम्न प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं :

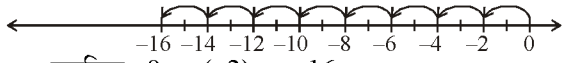

इसलिए, $8 \times (-2) = -16$

(iii) $3 \times (-7)$ $= (-7) + (-7) + (-7)$

इसे हम संख्या रेखा पर निम्न प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं :

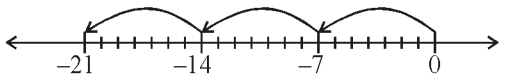

इसलिए, $3 \times (-7) = -21$

(iv) $10 \times (-1)$ $= (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1) + (-1)$

इसे हम संख्या रेखा पर निम्न प्रकार प्रदर्शित कर सकते हैं :

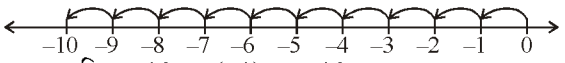

इसलिए, $10 \times (-1) = -10$

पृष्ठ 6 प्रयास कीजिए

प्रश्न—ज्ञात कीजिए :

(i) $6 \times (-19)$ **(ii) $12 \times (-32)$**

(iii) $7 \times (-22)$

हल—(i) $6 \times (-19) = -(6 \times 19) = -114$

(ii) $12 \times (-32) = -(12 \times 32) = -384$

(iii) $7 \times (-22) = -(7 \times 22) = -154$

पृष्ठ 7 प्रयास कीजिए

प्रश्न 1. ज्ञात कीजिए :

(a) $15 \times (-16)$ **(b) $21 \times (-32)$**

(c) $(-42) \times 12$ **(d) -55×15**

हल—(a) $15 \times (-16) = -(15 \times 16) = -240$

(b) $21 \times (-32) = -(21 \times 32) = -672$

(c) $(-42) \times 12 = -(42 \times 12) = -504$

(d) $-55 \times 15 = -(55 \times 15) = -825$

प्रश्न 2. जाँच कीजिए कि क्या

(a) $25 \times (-21) = (-25) \times 21$ है?

(b) $(-23) \times 20 = 23 \times (-20)$ है?

इस प्रकार के पाँच और उदाहरण लिखिए।

हल—(a) बायाँ भाग $= 25 \times (-21)$

$= -(25 \times 21) = -525$

दायाँ भाग $= (-25) \times 21$

$= -(25 \times 21) = -525$

अतः बायाँ भाग = दायाँ भाग

(b) बायाँ भाग $= (-23) \times 20$

$= -(23 \times 20) = -460$

दायाँ भाग $= 23 \times (-20)$

$= -(23 \times 20) = -460$

अतः, बायाँ भाग = दायाँ भाग

सामाजिक विज्ञान–कक्षा 7

हमारे अतीत-2 (इतिहास)

अध्याय 1. प्रारम्भिक कथन : हजार वर्षों के दौरान हुए परिवर्तनों की पड़ताल

पाठ-सार

• विश्व में प्रत्येक देश के इतिहास को तीन भागों में विभाजित किया जाता है—(1) प्राचीन काल (2) मध्य काल और (3) आधुनिक काल।

700 ईस्वी से लेकर 1750 ई. तक के काल को मध्य काल माना जाता है। इस पुस्तक में इन हजार वर्षों के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में हुए परिवर्तनों की पड़ताल की गई है।

नई और पुरानी शब्दावली–ऐतिहासिक अभिलेख कई तरह की भाषाओं में मिलते हैं और ये भाषाएँ भी समय के साथ बहुत बदली हैं। इनमें बदलाव व्याकरण, शब्द भंडार के साथ-साथ शब्दों के अर्थ में भी आया है।

इतिहासकार और उनके स्रोत–(1) सामान्यत: 700 से 1750 ईस्वी के काल के बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए सिक्कों, शिलालेखों, स्थापत्य तथा प्रमाणित लिखित सामग्री पर निर्भर करते हैं।

(2) इस काल में अनेक रूपों में पांडुलिपियाँ लिखी गईं। पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों में संग्रहित इन पांडुलिपियों से इतिहासकारों को विस्तृत जानकारी मिलती है।

(3) लेकिन इन पांडुलिपियों की प्रतिकृतियों में अनेक कारणों से अन्तर आ जाने से बड़ी गंभीर समस्या पैदा हो जाती है।

नए सामाजिक और राजनैतिक समूह–(i) 700 से 1750 ईस्वी के काल में बड़े पैमाने पर और अनेक तरह के परिवर्तन हुए। यथा—नई प्रौद्योगिकी, नए खान-पान तथा नए विचार।

(ii) इस काल में विभिन्न समुदायों का महत्त्व बढ़ा जिनमें राजपूत, मराठा, सिक्ख, जाट, अहोम तथा कायस्थ मुख्य थे।

(iii) नए कृषकों के जटिल समाज का अंग बन जाने से समाज के लोग पृष्ठभूमि तथा व्यवसाय के आधार पर जातियों व उपजातियों में बंट गये।

क्षेत्र और साम्राज्य–(1) इस काल में अनेक विशाल साम्राज्य पनपे; जैसे—चोल, तुगलक तथा मुगल।

(2) इन साम्राज्यों ने अपने पीछे अनेक भिन्न-भिन्न परम्पराएँ एवं संस्कृतियाँ छोड़ीं।

पुराने और नए धर्म–1. इस युग में हिन्दू धर्म में देवी-देवताओं की पूजा, मंदिरों के निर्माण, ब्राह्मणों के बढ़ते महत्त्व तथा भक्ति की अवधारणा के रूप में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए।

2. इसी युग में इस उपमहाद्वीप में नए-नए धर्मों, जैसे—इस्लाम धर्म का आगमन हुआ।

समय और इतिहास के कालखण्डों पर विचार–(1) अंग्रेज इतिहासकारों ने भारत के इतिहास को तीन युगों में बाँटा था—(i) हिन्दू (ii) मुस्लिम और (iii) ब्रिटिश। लेकिन इस काल विभाजन को आज बहुत कम इतिहासकार ही स्वीकार करते हैं।

(2) अधिकतर इतिहासकार आर्थिक एवं सामाजिक कारकों के आधार पर ही विभिन्न कालखण्डों की विशेषताएँ तय करते हैं।

पाठगत प्रश्न

पृष्ठ संख्या 2

प्रश्न 1. पाठ्यपुस्तक के मानचित्र-2 पर भारतीय उपमहाद्वीप में भीतरी इलाकों पर नजर डालें। क्या इनमें उतने ही ब्यौरे हैं जितने समुद्र तट वाले हिस्से में? गंगा के मार्ग को देखें। इसे किस तरह से दर्शाया गया है? इस मानचित्र में तटीय और भीतरी इलाकों के बीच ब्यौरों

और बारीकी का जो अन्तर है, आपके ख्याल में उसका कारण क्या है?

उत्तर—नहीं, मानचित्र-2 पर उपमहाद्वीप के भीतरी इलाकों में उतने ब्यौरे नहीं हैं, जितने समुद्र तट वाले हिस्से में हैं। इसका कारण यह है कि यह मानचित्र यूरोपीय नाविकों तथा व्यापारियों द्वारा प्रयुक्त किया जाता था और वे भारत के आंतरिक स्थानों में नहीं जाते थे। वे तटीय क्षेत्रों में ही लोगों के साथ व्यापार करते थे। इसलिए तटीय क्षेत्रों के ब्यौरे और बारीकी का स्तर मानचित्र में अधिक है।

पृष्ठ संख्या 3

प्रश्न 1. क्या आपको ऐसे कुछ और शब्दों का ध्यान आता है जिनके अर्थ भिन्न-भिन्न संदर्भों में बदल जाते हैं?

उत्तर—'जन' शब्द प्रारंभ में किसी विशेष समुदाय के संबोधन के लिए प्रयुक्त होता था। बाद में यह शब्द 'भूमि' के लिए प्रयुक्त हुआ और इसके बाद यह 'जनसंख्या' के लिए प्रयुक्त हुआ।

पृष्ठ संख्या 4

प्रश्न 1. कागज कब अधिक महँगा था और कब आसानी से उपलब्ध था—तेरहवीं शताब्दी में या चौदहवीं शताब्दी में?

उत्तर—13वीं शताब्दी के दौरान कागज अधिक महँगा था, लेकिन 14वीं शताब्दी में यह कम महँगा था तथा आसानी से उपलब्ध था।

पृष्ठ संख्या 8

प्रश्न 1. इस अनुभाग में जो प्रौद्योगिकीय, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन वर्णित हैं, उनमें से कौन-कौन से परिवर्तन आपकी समझ में आपके शहर या गाँव में सबसे महत्त्वपूर्ण रहे?

उत्तर—विद्यार्थी जिस गाँव या शहर में रहते हैं, उनमें कौन-कौन से प्रौद्योगिकीय, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन आए, उनको स्वयं देखें व उनका वर्णन करें।

पृष्ठ संख्या 10

प्रश्न 1. अमीर खुसरो द्वारा उल्लिखित भाषाओं की एक सूची बनाइए। और एक सूची उन भाषाओं के नामों की बनाइए जो उनके द्वारा उल्लिखित क्षेत्रों में आज बोली जाती हैं।

उत्तर—अमीर खुसरो द्वारा उल्लिखित भाषाओं की सूची इस प्रकार है—(1) सिंधी, (2) लाहौरी, (3) काश्मीरी, (4) द्वारसमुद्री (दक्षिणी कर्नाटक में), (5) तेलंगानी (आंध्रप्रदेश में), (6) गूजरी (गुजरात में), (7) मअबारी (तमिलनाडु में), (8) गौडी (बंगाल में), (9) अवधी (पूर्वी उत्तर प्रदेश में), (10) हिंदवी (दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में)।

अमीर खुसरो द्वारा उल्लिखित क्षेत्रों में आज बोली जाने वाली भाषाओं की सूची :

क्रमांक	क्षेत्र	आज बोली जाने वाली भाषा
1.	सिंध (वर्तमान में पाकिस्तान में)	सिंधी
2.	लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान में)	पंजाबी/लाहौरी
3.	काश्मीर	काश्मीरी
4.	कर्नाटक	कन्नड़
5.	गुजरात	गुजराती
6.	आंध्र प्रदेश	तेलुगू
7.	तमिलनाडु	तमिल
8.	उत्तर प्रदेश	हिन्दी
9.	बंगाल	बंगाली
10.	देहली	हिन्दी

प्रश्न 2. आप क्या समझते हैं, शासक ऐसे दावे क्यों करते हैं?

उत्तर—शासक भारत के भिन्न-भिन्न भागों में भूमि के बड़े क्षेत्र के ऊपर अपने नियंत्रण व अपनी सत्ता को दर्शाने हेतु तथा एक शक्तिशाली शासक होने की लोकप्रियता हासिल करने के लिए ऐसे दावे करते हैं।

पृष्ठ संख्या 11

प्रश्न 1. क्या आपको संस्कृत ज्ञान एवं ब्राह्मणों के बारे में अमीर खुसरो की टिप्पणियाँ याद हैं?

उत्तर—अमीर खुसरो ने संस्कृत के बारे में कहा कि संस्कृत एक प्राचीन भाषा है तथा यह किसी विशेष क्षेत्र की भाषा नहीं है, "जिसे केवल ब्राह्मण जानते हैं, आम जनता नहीं।"

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

फिर से याद करें—

प्रश्न 1. अतीत में 'विदेशी' किसे माना जाता था?

उत्तर—अतीत में किसी गाँव में आने वाला कोई भी अनजाना व्यक्ति, जो उस समाज या संस्कृति का अंग न हो, विदेशी कहलाता था। (ऐसे व्यक्ति को हिन्दी में परदेशी और फारसी में अजनबी कहा जा सकता है।) इसलिए किसी नगरवासी के लिए वनवासी 'विदेशी' होता था किन्तु एक ही गाँव में